

... ब्रह्मपद (पाँचवाँ अध्याय) ...

लेकिन कुलभूषण कल्लाजी राठोड को मात्र तीन वर्ष की अल्पायु में ही अपने माता व पिता के असामयिक अवसान का दर्द देखना पड़ा। उसके बाद शिशु कल्ला के लालन पालन की जिम्मेदारी स्व. अवलसिंह राठोड की बड़ी बहन भक्तिसमिति मीरौबाई के हाथों में थी। उनके अपनत्व भरे लाड-प्यार से कल्लाजी को धीरे-धीरे अपनी बुआजी के भीतर ही अपने माता-पिता की स्नेहिल छवि का आभास होने लगा। मीरौबाई की छत्रछाया में कल्लाजी ने शैशवकाल से बढ़ते हुए बचपन की दहलीज पर अपने कदम रखे। इस अवस्था में कल्लाजी को कभी-कभी ईश्वरीय चमत्कार भी महसूस होने लगे थे। मीरौबाई के आध्यात्मिक प्रभाव से अब उनका अधिकाधिक समय ध्यान-साधना तथा पूजन-अर्चन में ही व्यतीत होता था।

... शैषव दर्शित (छद्म अध्याय) ...

(ऐसे ही एक बार किशोरावस्था के प्रारम्भिक दौर में वे अकेले ही वनभ्रमण करते हुए बहुत दूर तक निकल गये। वहाँ घने जंगल में उनको एक महात्माजी के दर्शन का लाभ मिला और आश्चर्यजनक रूप से किसी चुम्बकीय आकर्षण की भाँति उस महापुरुष से मुलाकात के मकसद से कल्लाजी उनके पीछे-पीछे चलने लगे। आगे कुछ दूरी पर जाकर वह सिद्धयोगी साधु महाराज एक गुफा के भीतर प्रवेश कर गये। उनके पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए कल्लाजी ने भी उस गुफा के भीतर प्रवेश लिया और उस सन्त-महात्मा के श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम अर्पित किया।

अकरमात ही उस सन्यासी की नीली नेत्रज्योति से कल्लाजी को किसी ईश्वरीय शक्ति की अनुभूति होने लगी। तभी महात्माजी की अमृतवाणी गुंज उठी कि "हे कल्ला, तू कोई साधारण पुरुष नहीं है। तू पूर्वजन्म से ही मेरा शिष्य रहा है और इस समय शिवशक्ति के शेषावतार रूप में तुम्हारा आविर्भाव हुआ है। मैं इस जन्म में भी तुझे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर आशीर्वाद देता हूँ कि भविष्य में किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के लिए तुझे गुरु के पास जाने की कोई जरूरत नहीं होगी। अस्त्रकला, शस्त्रकला, रणकौशल, युद्ध में निपुणता एवं बौद्धिक विकास सहित समस्त ज्ञान स्वतः मिलता जायेगा। साथ ही अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के अनुरूप तुम्हें अपने इस अवतार को जनसेवा, राष्ट्ररक्षा और विश्वकल्याण हेतु खपाना है। जगद्जननी जगदम्बा की कृपादृष्टि से जीवन पथ के हर मुकाम पर अनवरत आगे बढ़कर तुम विजय श्री का वरण करते रहोगे।"

कुदरत के इस करिश्में से चकित कल्लाजी ने अपनी आँखें खोली और एक अपरिचित गुरुदेव के रूप में साक्षात भैरव के आशीर्वचन से उनका रोम-रोम रोमांचित हो उठा।

... मेवाड में पदार्पण (भातवाँ अष्ट्याय) ...

धीरे-धीरे कालचक्र का पहिया अनवरत आगे बढ़ता रहा। तद्पश्चात् यौवन की ऊर्जावान दहलीज पर आते ही कुँवर कन्ना राठोड को अपने चाचा व चित्तोड के सेनापति जयमलजी राठोड का बुलावा मिलता है और वे अपनी बुआजी से विदा लेकर मेवाड की माटी पर पदार्पण करते हैं। वहाँ पहुँचने के बाद अपने काकोसा के श्रीमुख से मेवाडी आन, बान, शान व चित्तोड का गौरवान सुनकर वे इस वीर प्रसुता माटी के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा, समर्पण व सम्मान की भावना को लेकर बारम्बार नतमस्तक होते हैं।

इसी सद्भावना के साथ मेड़तिया कुँवर कल्याणसिंह राठोड अगले ही दिन जयमलजी के भतीजे के रूप में अपने परिचय के माध्यम से महाराणा से स्बर होते हैं और वहाँ पर भी मेवाड के ओजस्वी इतिहास का स्मरण करते हुए महाराणा उदयसिंहजी की सादगी व सज्जनता से बेहद प्रभावित हो जाते हैं।

... चित्तोडी खेना में (आठवाँ अष्ट्याय) ...

फलस्वरूप वे मेड़ता की भाँति ही मेवाड को भी अपनी मातृभूमि मानकर राणाजी से राष्ट्र की सेवार्थ सेना में भर्ती हेतु आत्मीय अनुरोध करते हैं। कन्नाजी के इस पवित्र हृदयोद्गार से प्रसन्नचित महाराणा खुद अपने कर कमलों से उनको मेवाडी तलवार भेंटकर कहते हैं कि “हे मेड़तापति कल्याणसिंह राठोड, मेवाड की माटी के प्रति तुम्हारी इस पवित्र अभिलाषा का मैं अन्तर्मन से आत्मीय अभिनन्दन करता हूँ। लेकिन मेवाड की स्वाभिमानी सेना का अंग बनने के लिए तुम्हें अपनी बहादुरी का परिचय देना होगा। इसलिए चित्तोड की राजगद्दी का यह आदेश है कि इस तलवार से तुम्हें लगातार एक माह तक प्रतिदिन एक सौ एक बकरों की बली देनी होगी। अगर तुम निश्चिन्त होकर पूरी नीडरता के साथ इस आदेश की अनुपालना में शत-प्रतिशत सफल होते हो, तो आज से ठीक एक माह बाद तुमको मेवाडी सेना में शामिल होने का मौका मिल जायेगा।”

महाराणा के मुख से ऐसी नापाक वाणी को सुनकर कन्नाजी की रगों में बहता राठोडी खून उबाल लेने लगा। उनके भीतर क्रोध की ज्वाला भभक उठी और राणाजी को उनकी तलवार वापस सौंपते हुए कन्नाजी ने कहा कि “हे महाराणा, मैं इस गौरवशाली राजपुताना माटी का मेड़तिया सरदार कल्याणसिंह राठोड मेवाड की महिमा से प्रेरित होकर तथा यहाँ की धीरता व वीरता से अभिभूत होकर राष्ट्ररक्षा यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति देने के लिए आपके दरबार में उपस्थित हुआ हूँ। मुझे यदि आप सेकड़ों या सहस्रों शत्रुओं के भी शीघ्र काटने का आदेश देते तो मैं अभी इसी वक्त केशरिया बाना पहनकर रणक्षेत्र में रणबंका राठोड के रूप में लड़ने के लिए तैयार हूँ। लेकिन निर्दोष, निर्बल, निहत्थे जीवों को मृत्युदण्ड देकर मुझे योद्धा बनने का कोई शोक नहीं है। अगर मुझे पहले से ही पता होता कि भगवान एकलिंगनाथ के इस पवित्र देश में किसी सुरमा की पहचान के

लिए ऐसी हिंसक परीक्षा होती है, तो मैं आपके दरबार में अपनी हाजिरी कदापि नहीं देता।” कुँवर कल्ला राठोड के ये अमृत उद्गार सुनकर और जयमलजी से उनके बुद्धि, बल व चातुर्यपूर्ण पराक्रम के बारे में जानकर महाराणा उदयसिंहजी अत्यन्त खुश होते हैं तथा सहर्ष ही कल्लाजी को मेवाड़ी सेना में शामिल कर अपने प्रमुख सेनापति जयमलजी व पताजी का सहायक नियुक्त कर देते हैं। धीरे-धीरे युद्ध की सभी बारीकियाँ सीखकर वे रणकौशल में पारंगत बन जाते हैं।

... छप्पन राज (तवगों अड्याव) ...

कुछ समय बाद महाराणा के आदेशानुसार कल्लाजी ने भोरईगढ व टोकरगढ के मुखिया और उस क्षेत्र के निर्मम लुटेरों पेमला गमेती पर चढाई कर दी। यह लडाई कई दिनों तक चलती रही। इस बीच वीर कल्ला की युद्धकला के साहसिक समाचार जब शिवगढ की राजकुमारी कृष्णाकान्ता को ज्ञात हुए तो वह क्षत्रिय शूरबाला भी वीर पुरुष का रूप धारण कर एक अपरिचित सैनिक के रूप में युद्धक्षेत्र में कल्लाजी का बराबर साथ निभाती रही। आखिरकार कुँवर कल्याणसिंह ने पेमला तथा उसके सभी दुष्ट साथियों को मौत के घाट उतार कर आहत जनता को राहत का रसपान कराया।

कल्लाजी के इस विजयी अभियान का समाचार सुनते ही गदगद महाराणा ने उनको राव की उपमा से अलंकृत कर भोरईगढ तथा टोकरगढ सहित वागड अंवल के छप्पन परगने का ठाकुर विभूषित कर दिया।

... प्रेम प्रसंगं/पवित्राद्योत्सव (द्वेषाँ अट्टयाय) ...

इधर जहाँ कल्लाजी के इस अतुल पराक्रम पर मोहित (कृष्णा कान्ता) मन ही मन अपने पति के रूप में उनका वरण कर लेती है। वही वीरवर कल्ला राठोड भी रणक्षेत्र में इस क्षत्रिय बाला के ओज व तेज को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। तदुपरान्त (शिवगढ के महाराजा कृष्णादत्त और महारानी चन्द्रप्रभा) को जब अपनी (इकलोती पुत्री) का यह उत्तम निर्णय ज्ञात हुआँ तो उन्होंने भी इस पर राजी-खुशी अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी तथा पारस्परिक विचार-विमर्श के बाद कल्लाजी को उनके गृहनगर मेड़ता में विवाह का टीका एवं मुहूर्त भेंट किया गया।

अब दोनो तरफ से विवाह की तैयारियाँ शुरू हो गई। नियत तिथि पर मेड़ताकुँवर कन्नौजी राठोड की भारत का साज-सिंंगार शुरू हुआ। एक सुन्दर सुशील युवराज की तरह अपनी आराध्या देवी जगद्वननी जगदम्बा को प्रणाम कर एवं अपनी कुलदेवी राजराजेश्वरी माँ नागेश्वरी का स्मरण कर वे घोड़े पर सवार हुए। ऐसी अवस्था में कन्नौजी के रूप में साक्षात् कामदेव का प्रतिरूप महसूस हो रहा था। इस माहोल में उनकी आकर्षक और मनोहर मुखमुद्रा पर जो भी नजर जाती, उनके इस रूप-लावण्य के मायाजाल में बहुत देर तक खोई-खोई सी रहती थी।

इधर रिजियाँ अपने रस्मों—रिवाज, शैतिनीति और सांस्कृतिक संस्कारों की चर्चा में व्यस्त थी। कही—कही सरस लोकगीतों की सुमधुर धूनें वातावरण उल्लास का अहसास भर रही थी और इस रंगीन फिजां को अपने साथ लेकर कुँव कल्ला राठोड की बारात मेडता (मारवाड) से शिवागढ (मेवाड) की दिशा प्रस्थान करती है। तयशुदा मुहूर्त के अनुसार यह सजी-धजी बारात सांध्यवेले के समय शिवागढ के दरबार में पहुँच चुकी है। दिनाधिपति सूर्यदेव प्रकाशपुंज व अपने आगोश में लेकर अस्ताचल की ओर लोट चुके हैं। समुचा शिवागढ रोशन की जगमगाहट में आज अपनी राजकुमारी के विवाह प्रसंग पर प्रफुल्लित होक

झुम उठा है। घर की छत पर, इधर-उधर मुंडों पर तथा अन्य ऊँचे स्थानों पर चढकर शिवगढ की बालिकाएँ, बालक एवं स्त्री-पुरुष दुन्हे राजा की केवल एक झालक पाने के लिए ही लालायित हो रहे हैं।

शहनाई की मीठी स्वरलहरी के साथ वैवाहिक मंगलगान गुंज रहे हैं और अपने हाथों में दीपमालिका लिये कन्यादल द्वारा कल्लाजी की आरती उतारी जा रही है। पास में ही सुशील सौन्दर्य की साकार प्रतिमूर्ति कृष्णाकान्ता अपने हाथों में दरमाला लेकर अपनी सखियाँ के बीच खड़ी हुई हैं। जो घूँघट की आड से दिलबर का दीदार कर मन ही मन मदहोश हो रही हैं। कल्लाजी भी सबकी नज़रें बचाकर कृष्णाजी से नैन मिलाते हुए अपनी प्रीति का पैगाम पहुँचा रहे हैं और इस तरह दोनों ही एक-दूजे की मधुर मुरकान पर मुदित हो रहे हैं।

अब मेड़तिया राठोड ने लगाम खेचकर घोड़े को आगे बढ़ाया और अपने हाथों में सुशोभित तलवार की धार से तोरण को स्पर्श किया। सामने से अपने सुन्दर हाथों में वरमाला लिये शरमाती, सकुचाती, लजाती राजकुमारी कृष्णाजी धीरे-धीरे कन्नाजी की और अपने कदम बढ़ाती जा रही है और अगले ही पल राजकुमारी के हाथों की यह माला कन्नाजी की गलमाल बन चुकी है। इस मौके पर समुधा शिवागढ़ ढोल-नगाडों व बेण्ड-बाजों के बीच तालियों की गड़गड़ाहट से मदमस्त हो चुका है।